श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित भक्त कबीर जी की वाणी के विविध आयाम

डा. राजेश शर्मा

संगीत विभाग, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर

अर्मूत

भिन्नदृभिन्न समय में यहां पर भिन्नदृभिन्न प्रकार के धार्मिक संप्रदाओं का प्रादुर्भाव हुआ। अगर इतिहास में दृष्टिपात करें तो हम उसके क्रमिक विकास में देखते हैं कि वैदिक काल में किस प्रकार वेदों की रचना हुई फिर पौराणिक काल में पुराणों की रचना हुई, रामायण काल,महाभारत काल, जैन एवं बुद्ध काल में विशिष्ट प्रकार के सनातनी परंपरा अथवा उसकी उपशाखाओं के रूप में कई संपर्दाओं का बीज प्रस्फुटन हुआ और इन सब के द्वारा मानव कल्याण, ईश्वर उपासना एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु कई सिद्धांतो, नियमों का निर्माण किया गया और इन्ही के अधार पर कई धार्मिक ग्रन्थों की रचना की गई। इन सब का मूल मर्म उपासना, भक्ति के द्वारा या तो इश्वर को प्रसन्न करना या इश्वर की प्रसन्नता को प्राप्त करना था।हम सब भली भांति परिचित हैं कि जब जब समाज में दुराचार,आसुरीय प्रवृति एवं अधमदृअभिमानी लोगों ने मानवीय मूल्यों का पतन किया और मानवता की कोमल भावनाओं को ठेस पहुंचाई तब तब प्रभु किसी विशिष्ट अवतारी पुरुष, संत के रूप में सज्जन जनों की पीड़ा का हरण करने के लिए अवतरित हुए हैं। मध्य काल पर दृष्टि पात करे तो उसे संतो के अवतरण का स्वर्णिम काल माना जाता है। इस काल में कई संत हुए जैसे नामदेव, मीराबाई, सूरदास, महाप्रभु वल्लभाचार्य आदि। इसी क्रम में भक्त कबीर दास जी का अद्वितीय स्थान है।श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कबीर वाणी का सांगीतिक एवं विधागत अध्ययन करते हुए पता चलता है कबीर साहिब जी ने अपनी वाणी कई शलोको, पदों, शब्दों और अन्य लोक परम्परा की साहित्यक शैलियों में लिखी है एवं उसके लिए लगभग 17 रागों का प्रयोग उनके गायन हेतु शीर्षक के रूप में वाणी के उपर दिया गया है।

कुंजी शब्दः कबीर वाणी, धार्मिक परम्परा , मानवीय मूल्य , श्री गुरु ग्रंथ साहिब , सांगीतिक अध्ययन

संपूर्ण जगत में भारत की गरिमा एक विशिष्ट रूप को धारण किए हुए हैं। इसी विशिष्टता के कारण भारत को (जगद्गुरु) होने का गौरव भी प्राप्त है। भारत की विशिष्टता के मूल स्तंभ इसकी संस्कृति एवं दर्शन हैं। सम्पूर्ण जगत के जिज्ञासु अपने ज्ञान की पिपासा को तृप्त करने हेतु भारत में शरणागत होते थे। जहां, यहां के त्योहारों , उत्सवों, मेलों, सांस्कृतिक मूल्यों का आकर्षण लोगों को भरबस यहां खीच लाता था ,वहां धार्मिक शिक्षा, अनुष्ठान एवं आत्म चिंतन का मूल स्त्रोत होने के कारण भारतवर्ष पूरे विश्व के आकर्षण का बिंदु रहा है।

भिन्नदृभिन्न समय में यहां पर भिन्नदृभिन्न प्रकार के धार्मिक संप्रदायियो का प्रादुर्भाव हुआ। अगर इतिहास में दृष्टिपात करें तो हम उसके क्रमिक विकास में देखते हैं कि वैदिक काल में किस प्रकार वेदों की रचना हुई फिर पौराणिक काल में पुराणों की रचना हुई, रामायण काल,महाभारत काल, जैन एवं बुद्ध काल में विशिष्ट प्रकार के सनातनी परंपरा अथवा उसकी उपशाखाओं के रूप में कई संपर्दाओं का बीज प्रस्फुटन हुआ और इन सब के द्वारा मानव कल्याण, ईश्वर उपासना एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु कई सिद्धांतो, नियमों का निर्माण किया गया और इन्ही के अधार पर कई धार्मिक

ग्रन्थों की रचना की गई। इन सब का मूल मर्म उपासना, भक्ति के द्वारा या तो इश्वर को प्रसन्न करना या इश्वर की प्रसन्नता को प्राप्त करना था।वास्तव में भक्ति का अर्थ ही इश्वर के प्रति विशेष अनुराग, अनुरक्ति अथवा आत्म समर्पण ही है। भक्ति के प्रचार एवं प्रसार के लिए जो विशेष व्यक्ति सेतु के रूप में अवतरित हुए अथवा जिन्हो ने भक्ति के मूलभूत सिद्धांतों एवं इसके मर्म से जनसाधारण को अवगत करवाने का कार्य किया। उन्हें हम संत, भक्त, पीर,फकीर, गुरू, मुर्शद आदि की संज्ञाओं से संबोधित करते हैं। हम सब भली भांति परिचित हैं कि जब जब समाज में दुराचार,आसुरीय प्रवृति एवं अधमदृअभिमानी लोगों ने मानवीय मूल्यों का पतन किया और मानवता की कोमल भावनाओं को ठेस पहुंचाई तब तब प्रभु किसी विशिष्ट अवतारी पुरुष, संत के रूप में सज्जन जनों की पीड़ा का हरण करने के लिए अवतरित हुए हैं। श्रीमद भागवत गीता में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए इस बात की पुष्टि इस प्रकार करते हैं कि –

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।"[1]

अर्थात् जब–जब इस पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है, विनाश का कार्य होता है और अधर्म आगे बढ़ता है, तब–तब मैं इस पृथ्वी पर आता हूँ और इस पृथ्वी पर अवतार लेता हूँ। इसी प्रकार हम देखते हैं कि रावण व अन्य असुरों के परकोप से बचाने और मर्यादा की स्थापना करने हेतु भगवान श्री राम ने, कंस जैसे पापी के विनाश एवं धर्म की स्थापना हेतु भगवान श्री कृष्ण ने जन्म लिया ठीक इन्ही की भांति निरंतर रूप में अवतारी पुरुष अवतरित होते हैं और समाज में धर्म की स्थापना कर लोगों की शारीरिक एवं आत्मिक पीड़ा को हरते हैं।

मध्य काल पर दृष्टि पात करे तो उसे संतो के अवतरण का स्वर्णिम काल माना जाता है। इस काल में कई संत हुए जैसे नामदेव, मीराबाई, सूरदास, महाप्रभु वल्लभाचार्य आदि। इसी क्रम में भगत कबीर दास जी का अद्वितीय स्थान है।"कबीर साहिब का जन्म सन 1398 में हुआ उनके पिता नीरू और माता नीमा जुलाहे थे और बनारस नगर के बाहरी छोर पर रहते थे।"[2] बाल्य काल से ही इश्वर के प्रति अनुराग इन्हे चैन से नहीं रहने देता था। योग्य गुरु की तड़प में ये बहुत भटके और अंततः इन्हे स्वामी रामानन्द जी की शरणागत प्राप्त हुई और इनकी व्याकुलता त्रिप्त हुई।भले ही कबीर दास उनके शिष्य हुए परंतु उन्होंने अपने गुरु की पूजा विधि और करम कांड का अनुसरण नही किया। इन्होंने निर्गुण वादिता को आधार बनाया और अपना आध्यात्मिक चिंतन मनन किया। जिसके फलसरूप दो धार्मिक ग्रन्थों की रचना की "कबीर जी की वाणी के परमुख रूप से तीन स्त्रोत हैं बीजक, कबीर ग्रंथावली और आदि ग्रंथ।"[3]

यहां विचारणीय बात यह है कि कबीर साहिब की प्रमुख दो रचनाएं हैं,परंतु यहां संदर्भ में 'आदि ग्रंथ 'का जिक्र भी किया गया है। यह पवित्र ग्रंथ कौन सा है? इसके उत्तर में ये कहा जा सकता है कि यह आदि ग्रंथ वह पावन व पवित्र धार्मिक ग्रंथ है जो सिख धर्म का आधार ग्रंथ है । जिसे हम श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में जानते हैं और नतमस्तक होते हैं। जब श्री गुरु अर्जन देव (पंचम पातशाही) जी ने भाई गुरदास जी से अपने पूर्व चार गुरुओं और समान विचारधारा के अन्य सांप्रदायक संतो, भगतो की वाणी का संकलन कार्य किया तो इसे आदि ग्रंथ का नाम दिया गया तथा जब श्री गुरु गोबिंद सिंह (दसवीं पातशाही) जी ने आदि ग्रंथ में अपने पिता श्री गुरु तेगबहादुर (नवमी पातशाही) जी की वाणी को जोड़कर उन्हे भाई मनी सिंह जी से इसकी संपादना करवाई और इस पावन ग्रंथ को गुरु का दर्जा देते हुए समस्त सिक्खों को इसे गुरु के रूप में मानने का आदेश दिया।तब इस पावन ग्रंथ को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का नाम दिया गया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 6 गुरुओं, 15 भक्तों, 11 भट्टो और 4 गुरू सिक्खों की वाणी संकलित है। गुरु साहिबान की वाणी के अतिरिक्त बाकी भक्तों की वाणी देखें तो सर्वाधिक बनी भक्त कबीर दास जी की है। जिसे देखने से ज्ञात होता है कि इनकी वाणी कितने रागों में कितने शलोकों, पदों और कितनी वशिष्ट गायन विधाओं के रूप में संकलित की गई है।

1.श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कबीर वाणी का सांगीतिक एवं विधागत अध्ययन

कबीर साहिब जी ने अपनी वाणी कई शलोको, पदों, शब्दों और अन्य लोक परम्परा की साहित्यक शैलियों में लिखी है एवं उसके लिए लगभग 17 रागों का प्रयोग उनके गायन हेतु शीर्षक के रूप में वाणी के उपर दिया गया है। इन सभी सांगीतिक एवं साहितक अवयवो का वर्णन सारणी के रूप में दिया जा रहा हैः

दृसारणी

क्रम	राग	शब्द	अष्टपदी	अन्य वाणियां
1.	आसा	37		
2.	श्री	2		
3.	सोरठ	11		
4.	सारंग	3		
5.	सूही	5		
6.	केदार	6		
7.	गौड़	11		
8.	गुजरी	2		
9.	गौडी	73	1	बावन अखरी, थिती, सतवार
10.	तिलंग	1		
11.	धनासरी	5		
12.	प्रभाती	5		
13.	बिलावल	12		
14.	बसंत	8		
15.	भैरओ / भैरव	18	5	
16.	मारू	12		
17.	रामकली	12	223	6

2. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित कबीर वाणी के विविध आयाम

उपरोक्त सारणी द्वारा हमे विधित हो जाता है कि कबीर साहिब की वाणी कितने रागों और कितने पदों अष्टपदियों या अन्य वाणियों के रूप में हमे श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्राप्त होती हैं।अब यहां उनकी वाणी के धरातल में छिपे कुछ विषयों को ही स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। सबसे पहले तो लेखक के मतानुसार उनकी वाणी की विशिष्टता यह है कि कबीर साहिब अपने पदों में पहले प्रशन करते हैं और आगे कई उदाहरणों द्वारा उसका समाधान भी कर देते हैं यां कहीं कहीं कुछ नियम रूपी सूत्र या बिंदु अंकित कर उनकी पालना का निर्देश बाखूबी देते हैं।

इस प्रकार संत कबीर दास जी की वाणी के विविध पक्षों में से कुछ एक विषयों को यहां वर्णित किया जा रहा है।

2.1 अनहद नाद का सम्बोधन

प्रायः संगीत विषय के अध्ययन दृ अध्यापन में प्रारंभिक स्तर पर ही स्वर,नाद के वर्णन में नाद के दो रूप पड़ेदृ पढ़ाए पड़े जाते हैं जैसे आहत और अनाहत नाद । अनाहत जिसे अनहद नाद भी कहते हैं अक्सर यह कहकर ही विराम दिया जाता है कि अनहद नाद केवल ऋषियों द्वारा अपने भीतर से सुना जाता है परन्तु कबीर साहब ने तो अपनी वाणी में कतिपय इसके स्वरुप का भी सूक्ष्म दर्शन करा दिया है जैसे–

"राजा राम अनहद किंगुरी बाजै
जा की दिष्ट नाद लिव लागे" [4]

अर्थात् हे पंडित मेरे घट भीतर एक निरंतर तंत्री वाद्य (किंगुरी) की झनकार बज रही है जिस से रसाभोर होकर ही मेरी नाम शब्द में लिव लग रही है।

2.2 प्रभ् नाम महिमा सम्बोधन

कबीर साहिब ने अपनी वाणी में प्रभु नाम की महिमा का सर्वाधिक गुणगान किया है वह कहते हैं

"कहो कबीर एक राम नाम बिन
एह जग माया अंधा" [5]

अर्थात् कि राम के नाम बिना सकल संसार माया के द्वारा रचे हुए जंजाल में फस कर एक दृष्टिहीन व्यक्ति की भांति व्यवहार करता है। सिर्फ राम नाम रूपी प्रकाश द्वारा ही व्यक्ति इस से बच सकता है। इसी भांति एक अन्य शलोक में यह फरमाते हैं

" कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपर राम
आदि जुगादि सगल भगत ता को सुख बिसराम"[6]

अर्थात् कि मेरी रसना (जिह्वा) ही मेरी माला है। जिसके ऊपर निरंतर राम नाम का सिमरन चलता रहता है यह वो नाम है जो आदि काल से चला आ रहा है और सब भक्तों के हर सुख का आधार है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए कबीर साहिब कहते हैं–

" कबीर डगमग क्या करहे कहा डुलावह जियो
सरभ सुख को नायको राम नाम रस पियो" [7]

अर्थात् हे कबीर तुम अपने विचारों द्वारा डगमग डोल क्यूं रहे हो? अपने मन को नियंत्रित करो और राम के नाम से जोड़ो जो सब प्रकार के सुखों को देने वाला है और सबसे बड़ा आधार है।

2.3 करम कांड पर अंकुश का संबोधन

भक्त कबीर जी ने विविध विषयों पर वाणी की रचना कर मनुष्य को अंतरमुखी होने और व्यर्थ के करम कांडों पर अंकुश लगाने का निर्देश भी दिया है। वह कहते हैं

"क्या जप क्या तप क्या ब्रत पूजा
जा कै रिदै भाओ है दूजा
रे जन मन मादो सियो लाइऐ
चतुराई न चतुर्भुज पाइऐ ।। [8]

अर्थात् कि मानव बड़ी चतुरता से अभिमनवश ये दावा करता है के मैने लाखों में मंत्र का जप किया, कठोर तप किया या मैंने कई वर्ष व्रत किए परन्तु जब तक तुम्हारा मन माधव के साथ सच्ची प्रीति नहीं करता और इधर उधर लगा रहता है तब तक किसी भी साधन से इश्वर को प्राप्त नही किया जा सकता। एक और उदाहरण इसी तथ्य की पुष्टि करता है..

पाती तोरै मालिनी पाती पाती जियो
जिस पाहन कयो पाती तोरै सो पाहन निर्जीयो ।।[9]

अर्थात् कहते हैं हे मालिन तुम पत्थर की मूर्ती जो निर्जीव है उस पर चढ़ाने के लिए जीवित फूलों एवं पत्रों को तोड़ रही हो यह उचित नहीं क्योंकि यह पत्ते ब्रह्मा रूप, डालियां विष्णु रूप और फूल शिव रूप हैं तो वास्तव में तुम इन त्रि देव रूपी चेतनता को हानि पहुंचा कर किसको प्रसन्न करने की कोशिश कर रही हो। कबीर साहिब समाज को बाहर मुखी करम कांडो की अपेक्षा अंतर मुखी हो कर इश्वर से प्रेम करने का संदेश देते हैं।

2.4 बाहरी वेश भूषा व चिन्हों के आडंबर का सम्बोधन

जहां कबीर साहिब ने बाहरी थोथे करम कांड पर अंकुश का निर्देश दिया है । वहीं अपनी वाणी में बाहरी सांप्रदायिक वेश भूषा, चिन्हों का आडंबर के रूप में संबोधन भी किया हैं जैसे

"गज साढ़े तै तै धोतिआं तिहरे पायन तग
गली जिना जपमालिया लोटे हथ निबग"[10]

अर्थात जो मनुष्य साढ़े तीन गज लंबी धोती पहनते हैं और त्रि सूत्र का जनेऊ पहन हाथ में माला और चमकीले लोटे पकड़कर इश्वर के भगत होने का दिखावा करते हैं वास्तव में माया के अधीन वह संत नहीं अपितु बनारस के ठग हैं क्यूंकि बाहरी धार्मिक चिन्ह उन्होंने केवल भोले भाले लोगों को आकर्षित कर लूटने के लिए धारण किए हैं। अगली पंक्ति भी इसी और इशारा करती है :

"माथे तिलक हथ माला बाना
लोगन राम खिलौना जाना"[11]

अर्थात् कुछ व्यक्ति माथे पर बड़े बड़े तिलक लगाकर हाथों में माला लिए और भगवे चोले धारण कर इश्वर के अन्नय भक्त होने का दावा तो करते हैं वास्तव में वह तो इश्वर से भी नहीं डरते बल्कि उन्हें अपने हाथ का खिलौना ही समझते हैं।

2.5 जात पात के खंडन का सम्बोधन

मध्य कालीन सामाजिक ढांचे में ऊंच–नीच और जाति–पति का घुन लोगों की आत्मा को आहत कर रहा था और वर्गों के अधार पर समाज के बीच बहुत बड़ी खाई बन गई थी जिसका खंडन करते हुए कबीर साहिब ने अपनी वाणी में ऐसे संबोधन किया है कि

"कबीर मेरी जात कऊ सभ को हसने हार
बल्हारी इस जाति को जिह जपियो सिरजन हार" [12]

अर्थात् मेरी जात जुलाहा है जिस पर अक्सर लोग हस्ते हैं और नीच होने का अहसास करवाया जाता है परन्तु मैं अपनी इस जाति पर बलिहारी जाता हूं जिसमे जन्म लेने के कारण ही मैं परम पुरष परमात्मा की भक्ति कर पाया हूं।इसकी एक और बेहतरीन उदाहरण वह अपने निम्न पद में देते हैं

"जौ तू ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया
ताऊ आन बाट काहे नहीं आया
तुम कत ब्राह्मण हम कत सूद

हम कत लोहु तुम कत दूध
कहो कबीर जो ब्रह्म बेचारै
सो ब्राह्मण कहियत है हमारै"[13]

अर्थात् हे ब्राह्मण अगर तुम ब्राह्मणी के घर जन्म लेने के कारण श्रेष्ट हो तो तुमने भी इसी मार्ग से जन्म क्यू लिया जिससे सभ लेते हैं। किसी अन्य मार्ग से क्यू नही आए। अगर हमारी रगों में रक्त है तो क्या तुम्हारी रगों में दूध बहता है ? वास्तव में ऐसा नहीं है असली ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी तो वह है जो ब्रह्म (इश्वर) का विचार अथवा सिमरन ध्यान करता है। वह नहीं जो जाति के अधार पर उसे वरण में लेता है।

2.6 जीवन की नश्वरता का सम्बोधन

यह कबीर साहिब ने अपनी वाणी में जात पात का खंडन बड़ी तर्कशीलता से किया है वहीं ये जीवन की नश्वरता को भी बड़े सार्थक ढंग से अंकित करते हैं और बतलाते हैं कि चाहे कितने भी उपाय किए जाएं जीवन का वास्तविक सत्य तो मृत्यु ही है जो आया है उसे जाना है कबीर साहिब कहते हैं–

"जननी जानत सुत बड़ा होत है।।
इतना क्यो न जाने
जि दिन दिन अवध घटत है ।।"[14]

अर्थात माता सोचती है कि उसका बेटा बड़ा हो रहा है, नौजवान हो रहा है। इस भ्रम में वोह यह भूल जाती है कि वास्तव मे वह बड़ा नही हो रहा उसके एकदृएक दिन के बीतने से जीवन की अवधि घटती जा रही है। इसी से सम्बन्धित एक और उदाहरण भी इसी तथ्य को पुष्ट करती है कि

जोगी जपी तपी सन्यासी
बहु तीरथ भ्रमना।।
लुंजीत मुंजीत मोन जटाधर
अंत ताऊ मरना ।।[15]

अर्थात् चाहे कोई जोगी है या जपी है या बहुत अधिक तप करने वाला तपी और सन्यासी है। भले ही वह ज्योतिष शास्त्र का माहिर है या जादू टोना भी जानता है परंतु किसी भी क्रिया के द्वारा वह इस शरीर को स्दैव के लिए जीवित नहीं रख सकता अंत मृत्यु निश्चित है।

2.7 समानता के भाव का सम्बोधन

कबीर साहिब ने जहां जीवन की नश्वरता को बड़े सहज शब्दो मे व्यक्त कर हमे प्रभु नाम के शरणागत होने का संदेश दिया है वही मानवता को जागृति की तरफ अग्रसर करते हुए ये संदेश देते हैं की इस जगत में कोई बुरा नहीं है क्योंकि हम सब जीवों को बनाने वाला एक ही पारब्राह्म परमेश्वर है

"अवलि अलह नूर उपाया कुदरत के सभ बंदे।।
एक नूर ते सभ जग उपजिया कौन भले कौ मंदे।।[16]

अर्थात् सर्वप्रथम उस परमात्मा के नूर में ही पंचभूतों से इस सृष्टि की रचना की,एक प्रकार की मिट्टी (पंचभूत) से ही पशु–पक्षी, जानवर और मनुष्य को बनाया तो सोचने वाली बात है कि जब तत्व भी समान और रचनाकार भी समान है तो किसी प्रकार का अंतर कैसा ?अर्थात् सकल जगत

का आधार वह एक निराकर स्वरूप ही है। यहां कोई भला और कोई बुरा नहीं सब एक समान है कोई ऊंचा और कोई नीचा नही।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय दर्शन, अध्यात्म का स्वरूप बहुत महान है। यहां की धार्मिक परम्पराओं और संत समाज ने मनुष्य को सत्कर्म के मार्ग पर चलने का और इश्वर से एकाकार करने का मार्ग प्रशस्त किया है। इसी श्रेणी में भक्त शिरोमणि कबीरदास जी ने तो अपने आध्यात्मिक अनुभवों को समाज के सामने सहज शब्दों में रखकर उसे आत्म चिंतन करने हेतु दर्पण दिखा दिया है। जहां ये झूठी माया, जात पात, बाहरी वेशभूषा, चिन्हों, पवित्र और अपवित्रता का खंडन करते हैं । वहीं वशिष्ट प्रमाणों के द्वारा जीवन की नश्वरता प्रभु नाम की महिमा,सर्वजन एकाधार के भाव को भी व्यक्त करते हैं और साथ ही साथ प्रत्येक जन के भीतर बज रहे अनहद नाद का प्रमाण देते हुए उसे श्रवण करने का माध्यम व युक्ति भी बताते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में यहां वर्णित विषयों के अतिरिक्त अनेकानेक विषय ऐसे है। जिनका संबोधन कबीर साहिब जी ने किया है। परंतु प्रपत्र की सीमाबध्यता के कारण मात्र कुछ विषय ही लिए गए हैं।

सन्दर्भ सूची

1. महारिषि व्यास, श्रीमद भगवत गीता, अ. 4 श 7, गीता प्रेस, गौरखपुर,1958
2. सेठी शान्ति , संत कबीर, पृष्ठ. नं.15 राधा स्वामी सत्संग ब्यास प्रकाशक सं.12, 2017
3. हरजीत कौर, लघु शोध प्रबंध,कबीर बानी विच भगती दा सरुप, पृष्ठ नं.28,गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर 1987
4. भक्त कबीर जियो का शलोक श्री राग, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अ.स. 92, प्रकाशन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर,1951
5. भक्त कबीर जी गौड़ी पूरबी 12, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अ.338
6. भक्त कबीर जियो के शलोक, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अं. 1364
7. वही
8. भक्त कबीर जी गौड़ी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी,अं 324
9. कबीर जियो के पंचपदे आसा श्री 9 दोतुके 5,श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अं. 479
10. भक्त कबीर जी आसा, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अं. 476
11. भैरओ, भक्त कबीर जी, भैरओ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अं 1158
12. भक्त कबीर जियो के शलोक, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अं. 1364
13. भक्त कबीर जी गौड़ी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी,अं 324
14. भक्त कबीर जियो का श्री राग, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अं. 91
15. भक्त कबीर जी आसा, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अं. 476
16. भक्त कबीर जी प्रभाती, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अं. 1349